पटना विश्वविद्यालय
PATNA UNIVERSITY
Estd. 1917

Semester-4

EC-1

Topic----

"Movement for Formation Of Jharkhand"

Vetted By:

प्रो. (डॉ) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय पटना

सम्पर्क: 9835463960

डॉ राजेश कुमार

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय पटना

सम्पर्क: 9430934482

इस E-content में आंदोलन की पृष्ठभमि एवं आंदोलन के कारणों की चर्चा की गई है।

"भारत के रुर" कहे जाने वाले झारखंड वनों से आच्छादित छोटा नागपुर के पठार का हिस्सा है, जो गंगा के मैदानी हिस्से के दक्षिण में स्थित है। 1912 के पहले यह क्षेत्र बंगाल राज्य का हिस्सा था जबकि 1912 के पश्चात या बिहार राज्य के अंतर्गत आता था। इस क्षेत्र के निवासियों में जागरूकता और अपने क्षेत्र के हितों की अनदेखी करने की भावना जब इनमें उत्पन हुई तब इन्होंने बिहार से झारखंड को अलग कर एक अलग राज्य की स्थापना करने के लिए आंदोलन की शुरुआत की। अलग राज्य का दर्जा देने की मांग के साथ शुरू होने वाला यह आंदोलन एक सामाजिक राजनीतिक आंदोलन था। वस्तुत: झारखंड का पृथकतावादी आंदोलन न तो अलगवावादी था और न ही राष्ट्रविरोधी। यह क्षेत्रीय जागरूकता तथा आत्मसम्मान का आंदोलन था और इसे इसी दृष्टिकोण से देखा भी जाना चाहिए। अंततः दशकों से चली आ रही मांग 2000ईसवी में पूरी हुई। 15 नवंबर(बिरसा मुंडा का जन्म दिवस) 2000 को बिहार के दक्षिणी हिस्से को विभाजित कर झारखंड प्रदेश का सृजन किया गया और झारखंड अंतत: भारत का 28 वाॅ राज्य बना ।

बिहार झारखंड पृथकतावादी आंदोलन की पृष्ठभूमि में कई कारणों का

योगदान रहा है। इन कारणों में भाषा-अंतर, आर्थिक शोषण, क्षेत्रवासियों में एक नई चेतना का विकास, बंगाली बुद्धिजीवियों एवं संभ्रांत मुसलमानों के द्वारा अपने हितों को प्राथमिकता देने का प्रयास आदि प्रमुख कारण रहे हैं। इन क्षेत्रों में खड़िया, संथाल, मुंडा, हो, उरांव, बिरजिया, पहाड़ियां जैसे कई आदिवासी समूह के लोग निवास करते हैं। इस क्षेत्र में प्रमुख रूप से नागपुरी भाषा और कुडमाली भाषा बोली जाती है। इसके अलावा यहां मुंडा भाषा, हो भाषा, संथाली भाषा, खोरठा भाषा आदि बोली जाती है। दूसरी ओर बिहार में मगही, भोजपुरी, मैथिली आदि भाषा प्रमुख रूप से बोली जाती है। अत: इस क्षेत्र के निवासी भाषा के आधार पर अपने को अलग मानते रहे हैं। इसलिए उन्होंने भाषा के आधार पर बिहार से अलग एक नए और अलग राज्य की स्थापना के लिए आंदोलन किया

।जब 1956 ईस्वी में राज्य पुनर्गठन आयोग का गठन किया गया था। इस आयोग के सामने अलग झारखंड राज्य बनाए जाने की मांग प्रस्तुत की गई, जिसमें तत्कालीन बिहार के अलावा बंगाल के कुछ भाग सम्मिलित थे, परंतु एक भाषा नहीं होने के कारण उनकी मांग नहीं मानी गई। इसके बावजूद बिहार झारखंड पृथक आंदोलन चलता रहा।

बिहार- झारखंड पृथक आंदोलन का एक अन्य प्रमुख कारण आर्थिक असंतोष भी था। नवीन चंद्र प्रसाद अपनी रचना "छोटा नागपुर में अलगाववादी आंदोलन" में लिखते हैं कि वस्तुत झारखंड के पृथकतावादी आंदोलन को आर्थिक समस्याओं का राजनीतिक विस्फोट कहा जाना चाहिए। आदिवासियों को जब उनकी अपनी भूमि से बेदखल कर दिया गया, चारागाह भूमि सिमटने लगी, वन रोपण के तहत वहां स्थानीय रूप से उगने वाले पेड़ पौधों के बदले व्यवसायिक रूप से फायदेमंद पेड़ को रोपा जाने लगा तब यहां के निवासियों में असंतोष बढ़ने लगा। जब इस क्षेत्र में औद्योगिकरण की प्रक्रिया में तेजी आई तब भी यहां के लोगों को इसका लाभ नहीं मिला। संभवत: इस क्षेत्र में कोयले की खुदाई पहली बार 1856 ईसवी में हुआ। 1907 ईस्वी में "टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी" की स्थापना जमशेदपुर में हुई। आजादी के पश्चात इस क्षेत्र में औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया में और तेजी आई । इसके परिणाम स्वरूप बहुत सारे बाहरी लोग यहां आकर बसने लगे। महत्वपूर्ण पद एवं काम इन बाहरी लोगों को दिया जाने लगा। यहां के मूल निवासियों को

मजदूर के रुप में कुछ नियुक्तियां हुई लेकिन इससे वे संतुष्ट नहीं थे। इन से कम पैसों पर ज्यादा काम करवाया जा रहा था, बेगारी करवाई जा रही थी । इसके अलावा सरकारी भवनों, बांधों इत्यादि के लिए भी इनके भूमि का अधिग्रहण किया गया था लेकिन इसका लाभ यहां के लोगों को नहीं मिल पाया । जैसे बिजली के उत्पादन के लिए यहां बड़े-बड़े डैम बने लेकिन बिजली इनको कम और बाहरी लोगों को ज्यादा मिलने लगी। इस तरह यह आंदोलन आदिवासियों की बदतरीन शोषण का स्वाभाविक परिणाम कहा जा सकता है।

इस आंदोलन का एक अन्य कारण ईसाई मिशनरियों का इन क्षेत्रों में प्रवेश एवं उनकी गतिविधियां भी रही थी। यह कहा जाता है कि ईसाई धर्म प्रचारकों ने जहां-जहां भी अपना कार्य क्षेत्र बनाया है, उन-उन क्षेत्रों में राष्ट्र विरोधी गतिविधियां बढ़ी है । झारखंड राज्य की मांग भी इन्हीं की देन मानी जाती है,हालांकि इस मत को लेकर विद्वानों में मतभेद भी रहे हैं। 1845 ईस्वी में पहली बार ईसाई मिशनरियों का आगमन इस क्षेत्र में हुआ। इस क्षेत्र में उस समय से एक बड़ा सांस्कृतिक परिवर्तन और उथल-पुथल शुरू हुआ। शिक्षा, चिकित्सा तथा सामाजिक विकास के क्षेत्र में ईसाई मिशनरियों ने निश्चित रूप से प्रशंसनीय कार्य किए,(हालांकि उनके पीछे भी इनका अपना स्वार्थ ही रहा था) जिससे झारखंड में राजनीतिक चेतना जागने लगी। इन मिशनरियों ने उपेक्षित एवं शोषित जनजातियों को एक अलग

पहचान दिलवाई। उन्हें उनकी गौरवमय अतीत से परिचित कराया। उन्होंने इस भ्रांति को दूर किया कि जनजातियों में जातिगत धार्मिक एवं कलात्मक उपलब्धियों के गुण थे ही नहीं। जनजातियों के विषय में चारित्रिक दुर्बलता की अवधारणा का भी इन्होंने निवारण किया। जियाउद्दीन अहमद लिखते हैं कि इतिहासकारों एवं मानव शास्त्रियों की रचनाओं ने भी जनजातियों को अपने इतिहास एवं संस्कृति पर गौरव करने की प्रेरणा दी। ईसाई धर्म की धर्मांतरण के बावजूद आदिवासियों ने अपनी पारंपरिक आस्था भी कायम रखी और यह द्वंद कायम रहा, जो अंततः बिहार- झारखंड पृथक आंदोलन को जन्म दिया।

झारखंड आंदोलन का एक अन्य प्रमुख कारण बंगाली बुद्धिजीवियों एवं संभ्रांत मुसलमानों का स्वार्थ भी माना जाता है। जब बंगाल से 1912ईसवी में बिहार एवं उड़ीसा अलग हो कर एक नया प्रांत बना तभी से इन वर्गों के मन में एक खीज या गुस्सा उत्पन्न हुआ। बिहार में बंगालियों का वर्चस्व कायम रहा था जो अब नहीं रहा। बिहार में बंगला भाषा- भाषी अपने आपको असुरक्षित महसूस कर रहे थे और झारखंड में अपने को अधिक सुरक्षित महसूस करते थे। दूसरी और मुस्लिम लीग पाकिस्तान के पश्चिमी एवं पूर्वी भागों को जोड़ने वाली गलियारे में झारखंड क्षेत्र को शामिल करना चाहती थी। इस संदर्भ में A.P.Sharma अपनी रचना "द झारखंड मूवमेंट: ए क्रिटिक" में लिखते हैं कि इन दोनों वर्गों ने बिहार- झारखंड पृथकतावादी आंदोलन को हवा दी।

हालांकि गहनता से विचार करने पर यह स्पष्ट होता है कि यह मत बहुत तार्किक नहीं है। वस्तुतः बंगालियों का प्रशासनिक एवं राजनीतिक वर्चस्व बिहार में घटता नजर आ रहा था, ना कि झारखंड में। मुस्लिम लीग द्वारा प्रस्तावित गलियारे के मार्ग पर झारखंड पड़ता भी नहीं था। इस संदर्भ में इतना ही कहा जा सकता है कि इन दोनों वर्गों। ने बिहार से अलग झारखंड राज्य की स्थापना में आंदोलनकारियों का समर्थन किया थाइस तरह बिहार झारखंड पृथकतावादीआंदोलन की शुरुआत के पीछे कई कारण कार्य कर रहे थे। इन कारणों में झारखंड निवासियों का शोषण तथा वहां जागरूक वर्ग द्वारा अपने हितों की रक्षा प्रमुख कारण रहे थे। हालांकि आज भी अधिकांश आदिवासियों की स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं हुआ है।

नोट:- अगले e-content में आंदोलन की आरंभिक विफलता, प्रमुख नेतृत्वकर्ता एवं विस्तार के बारे में चर्चा की जाएगी।